فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और सच्चाई को झुठलाए

اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِىْ

जब वो उस के पास पहोंची? क्या जहन्नम में काफिरों के लिए ठिकाना नहीं है? और जो

جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾

सच को ले कर आया और उस की तस्दीक़ की तो वही लोग मुत्तक़ी हैं।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾

उन के लिए वो नेअमतें होंगी जो वो चाहेंगे उन के रब के पास। ये नेकी करने वालों का बदला है।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ

ताके अल्लाह उन से उन के बुरे आमाल दूर कर दे और उन को अच्छे

بِاَحْسَنِ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ

आमाल का सवाब दे। क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफी नहीं हैं? और ये आप को डराते

وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

हैं उन माबूदों से जो अल्लाह के अलावा हैं। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए कोई हिदायत

مِنْ هَادٍ ﴿٣٧﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ

देने वाला नहीं। और जिस को अल्लाह हिदायत दे उस के लिए कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या

اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ﴿٣٨﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

अल्लाह ज़बर्दस्त, इन्तिकाम लेने वाला नहीं है? और अगर आप उन से पूछेंगे के किस ने आसमानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

को पैदा किया, तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। आप फरमा दीजिए क्या फिर तुम ने देखा उन को जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِىَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ

अल्लाह के अलावा अगर अल्लाह मुझे ज़रर पहोंचाने का इरादा करे तो क्या वो अल्लाह के ज़रर को दूर

ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِىْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ

कर सकते हैं या अल्लाह मुझ पर महरबानी का इरादा करे तो क्या वो अल्लाह की रहमत को रोक सकते हैं?

قُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يٰقَوْمِ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह मुझे काफी है। और उसी पर तवक्कुल करने वाले तवक्कुल करते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ मेरी क़ौम!

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿٣٩﴾ مَنْ

तुम अपनी जगह पर अमल करते रहो, मैं भी अमल कर रहा हूँ। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा, के किस

يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّآ

पर ऐसा अज़ाब आता है जो उसे रुस्वा कर देगा और किस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? यक़ीनन हम

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى

ने आप पर ये किताब उतारी इन्सानों के लिए हक़ के साथ। फिर जो हिदायत पाएगा तो अपनी ज़ात

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ

के नफे के लिए। और जो गुमराह होगा तो उसी पर गुमराही का वबाल पड़ेगा। और आप

عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا ع

उन पर मुसल्लत नहीं हैं। अल्लाह हर जानदार की जान निकालता है उस के मरने के वक्त,

وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا

और उस की भी जो सोने की हालत में नहीं मरा। फिर अल्लाह रोक लेता है उस को जिस पर मौत का फैसला

الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

कर देता है और दूसरी को छोड़ देता है एक वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए। यक़ीनन उस में

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। क्या उन्हों ने अल्लाह के अलावा सिफारिशी बना

شُفَعَآءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾

लिए हैं? आप फरमा दीजिए के क्या अगर्चे वो किसी चीज़ के भी मालिक न हों और कुछ भी अक़्ल न रखते हों?

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही के लिए सारी सिफारिश है। उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ

फिर उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और जब तन्हा अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों

قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ

के दिल सुकड़ जाते हैं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उन का ज़िक्र किया जाता है

مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ

जो अल्लाह के अलावा हैं तो यकायक वो खुश हो जाते हैं। आप फरमा दीजिए के ऐ अल्लाह! ऐ आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

के पैदा करने वाले! ऐ मख़फ़ी और ज़ाहिर के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला

عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝۴۶ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ

करेगा जिस में वो इखतिलाफ कर रहे थे। और अगर उन ज़ालिमों के

ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ

पास वो सब हो जो ज़मीन में है और उस के जैसा उस के साथ और भी हो (दुगना) तब भी उस को अज़ाब की मुसीबत

مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

से बचने के लिए क़यामत के दिन फिदये में दे देंगे। और उन के सामने ज़ाहिर होगा अल्लाह की तरफ से

مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝۴۷ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ

वो जिस का वो गुमान (अन्दाज़ा) भी नहीं करते थे। और उन के सामने अपने अमल की बुराइयाँ ज़ाहिर हो

مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۴۸ فَاِذَا مَسَّ

जाएंगी और उन को घेर लेगा वो अज़ाब जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। फिर जब इन्सान को ज़रर

الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ز ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ

पहोंचता है तो वो हमें पुकारता है। फिर जब हम उसे अपनी तरफ से नेअमत अता करते हैं तो केहता है

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

के मुझे तो ये सिर्फ अपने हुनर की वजह से मिली है। बल्के ये आज़माइश है, लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۴۹ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى

जानते नहीं। यक़ीनन उस को उन लोगों ने भी कहा जो उन से पेहले थे, फिर उन के कुछ काम

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝۵۰ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ

नहीं आया वो जो वो किया करते थे। फिर उन को उन के आमाले बद की मुसीबतें पहोंचीं।

وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ

और उन में से जो ज़ालिम हैं उन्हें जल्द ही उन की बदअमली की सज़ा मिलेगी।

وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝۵۱ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

और ये (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकेंगे। क्या ये जानते नहीं के अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝۵۲ ع ۵

चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا

आप फरमा दीजिए ऐ मेरे बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़्यादती की है! तुम अल्लाह की रहमत से

مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ

मायूस मत हो। यक़ीनन अल्लाह तमाम गुनाह बख़्श देगा। यक़ीनन वो बहोत ज़्यादा

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और रूजूअ करो अपने रब की तरफ और उसी के ताबेदार बन कर रहो

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا

इस से पेहले के तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी नुसरत न की जाए। और सब से बेहतर कलाम की

اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ

पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया है इस से पेहले के तुम पर

الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ

अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न हो। कहीं कोई शख़्स केहने लगे

يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ

हाए अफ़सोस उस कोताही पर जो मैं ने अल्लाह के मुआमले में की और मैं मज़ाक करने वालों

لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ

में रेह गया। या वो यूँ कहे के अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं मुत्तक़ियों

مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ

में से बनता। या यूं कहे जब अज़ाब को देखे के अगर मेरे लिए दुन्या में पलट कर

كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ

जाना हो तो मैं नेकी करने वालों में से बन जाऊँगा। क्यूं नहीं! यक़ीनन तेरे पास मेरी आयतें आईं,

فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ

फिर तू ने उन को झुठलाया और तू ने तकब्बुर किया और तू काफिरों में से था। और क़यामत

الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ

के दिन आप देखोगे जिन्हों ने अल्लाह पर झूठ बोला उन के चेहरे सियाह होंगे।

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ

क्या जहन्नम में तकब्बुर करने वालों के लिए ठिकाना नहीं? और अल्लाह नजात देगा उन की

اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ

कामयाबी के साथ उन को जो मुत्तक़ी हैं। उन को मुसीबत नहीं पहोंचेगी और वो ग़मगीन नहीं होंगे। अल्लाह

خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۡ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ

हर चीज़ को पैदा करने वाला है। और वो हर चीज़ का कारसाज़ है। उसी के पास आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ

और ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। और जिन्हों ने अल्लाह की आयात के साथ कुफ्र किया वो खसारे वाले

ع ١٤ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا

हैं। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह के अलावा के मुतअल्लिक़ तुम मुझे हुक्म देते हो के मैं उस की इबादत करूँ,

الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

ऐ जाहिलो? यक़ीनन आप की तरफ और उन की तरफ जो आप से पेहले थे वही की गई।

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾

के अगर तुम शिर्क करोगे तो तुम्हारा अमल हब्त हो जाएगा और तुम खसारा उठाने वालों में से बन जाओगे।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ

बल्के अल्लाह ही की तुम इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में से रहो। और उन्हों ने अल्लाह की क़दर नहीं की

حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

जैसा के उस की क़दर करने का हक़ है। और ज़मीन सारी की सारी उस की मुठ्ठी में होगी क़यामत के दिन और

وَ السَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

आसमान लिपटे हुए होंगे उस के दाएं हाथ में। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जिन्हें वो शरीक ठेहराते हैं।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ

और सूर फूंका जाएगा, फिर बेहोश हो जाएंगे वो जो आसमानों में हैं और जो

فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ

ज़मीन में हैं मगर जिन को अल्लाह चाहे। फिर दूसरी मरतबा सूर फूंका जाएगा तो फौरन ही वो खड़े हो

قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ

जाएंगे, देखने लग जाएंगे। और ज़मीन रोशन हो जाएगी अपने रब के नूर से और नामअे आमाल

الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

रख दिया जाएगा, और अम्बिया और शुहदा को लाया जाएगा, और उन के दरमियान हक़ के साथ फैसला

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَ وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ

किया जाएगा, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। और हर शख्स को पूरे पूरे मिलेंगे वो अमल जो उस ने किए,

وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ع ٤

और वो उन के अमल खूब जानता है। और काफिरों को हांका जाएगा जहन्नम की तरफ

اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَ قَالَ

जमाअत दर जमाअत। यहाँ तक के जब वो उस के पास आएंगे तो उस के दरवाज़े खोले जाएंगे और उन से

لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ

उस के मुहाफिज़ फरिशते पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की

اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا

आयतें तिलावत करते और तुम्हें डराते थे तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से? वो कहेंगे

بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

क्यूं नहीं! लेकिन काफिरों पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ

कहा जाएगा के तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ उस में हमेशा रेहने के लिए। फिर ये

مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। और जो अपने रब से डरते रहे उन को लाया जाएगा जन्नत की तरफ जमाअत

اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ

दर जमाअत। यहाँ तक के जब वो उस के पास आएंगे इस हाल में के उस के दरवाज़े खुले हुए होंगे, और उस के

خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

मुहाफिज़ फरिशते उन से कहेंगे के तुम पर सलामती हो, तुम अच्छे रहे, फिर तुम उस में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا

और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से अपना वादा सच कर दिखाया और उस ने हमें

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ

इस ज़मीन का वारिस बनाया के हम जन्नत में रहें जहाँ हम चाहें। फिर ये अमल करने वालों का

الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ

कितना अच्छा बदला है! और तुम फरिशतों को देखोगे के सफ बांधे हुए होंगे अर्श के चारों

الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
तरफ, वो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कर रहे होंगे। और लोगों के दरमियान हक़ के मुताबिक़

بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾
फेसला किया जाएगा, और कहा जाएगा तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

اٰيَاتُهَا ٨٥ (٤٠) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ (٦٠) رُكُوْعَاتُهَا ٩
उस में ८५ आयतें हैं सूरह मोमिन मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾
हॉ मीम। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, इल्म वाले अल्लाह की तरफ से है।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِي
जो गुनाहों को बख्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला, सख्त सज़ा देने वाला, क़ुदरत

الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ
वाला है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी की तरफ लौटना है। अल्लाह की आयात में झगड़ा

فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ
नहीं करते मगर वो जिन्हों ने कुफ्र किया, इस लिए उन का मुल्कों में आना जाना आप को

فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ
धोके में न डाले। उन से पेहले झुठलाया क़ौमे नूह ने और उन के बाद आने वाले

مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ
गिरोहों ने। और हर उम्मत ने अपने रसूल के साथ इरादा किया के उस को पकड़ लें,

وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ
और उन्हों ने बातिल के ज़रिए झगड़ा किया ताके उस के ज़रिए हक़ को मिटा दें, फिर मैं ने उन को पकड़ लिया।

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
फिर मेरी सज़ा कैसी रही? और इसी तरह तेरे रब के कलिमात

عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ
काफिरों पर साबित हो गए के वो दोज़खी हैं। वो फरिशते जो अर्श को उठाए

الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ

हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और उस पर ईमान रखते

بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ

हैं और ईमान वालों के लिए मग़फिरत तलब करते है। ऐ हमारे रब! तेरी रहमत और तेरा इल्म

رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ

हर चीज़ पर हावी है, तो तू मग़फिरत कर दे उन की जिन्हों ने तौबा की और तेरा रास्ता अपनाया

وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ

और उन को दोज़ख के अज़ाब से तू बचा ले। ऐ हमारे रब! और तू उन को जन्नाते अद्न में दाखिल कर दे

الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ

जिस का तू ने उन से वादा किया है, और उन को भी जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और उन की बीवियों

وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ

और उन की औलाद में से। यक़ीनन तू ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और तू उन को बुराइयों से बचा ले।

وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ

और जिस को तू बुराइयों से बचा लेगा उस दिन यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया। और ये भारी

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ۧ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ ع ٩

कामयाबी है। यक़ीनन वो लोग जो काफिर हैं उन के लिए ऐलान होगा के अल्लाह का गुस्सा

اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ

तुम्हारे अपनी जानों पर गुस्से से ज़्यादा बड़ा है जब के तुम्हें बुलाया जाता था ईमान की तरफ,

فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا

फिर तुम कुफ्र करते थे। वो कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें दो मरतबा मौत दी और तू ने दो मरतबा

اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ

हमें ज़िन्दा किया, अब हम ने अपने गुनाहों का ऐतेराफ कर लिया, फिर क्या निकलने का कोई

مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ

रास्ता है? ये इस वजह से के जब तुम्हारे सामने यकता अल्लाह को पुकारा जाता था तो तुम कुफ्र करते थे।

وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢

और अगर उस के साथ शिर्क किया जाता तो तुम मान लेते थे। फिर हुकूमत बरतर बुलन्द अल्लाह ही के लिए है।

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ وَیُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ

वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है।

وَمَا یَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ یُّنِیْبُ ﴿۱۳﴾ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ

और नसीहत हासिल नहीं करते मगर जो रूजूअ इलल्लाह करते हैं। तो तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए

لَهُ الدِّیْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ رَفِیْعُ الدَّرَجٰتِ

इबादत खालिस करते हुए अगर्चे काफिर नापसन्द करें। वो दरजात बुलन्द करने वाला है,

ذُو الْعَرْشِ ۚ یُلْقِی الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰی مَنْ یَّشَآءُ

अर्श वाला है। वो रूह डालता है अपने अम्र से जिस पर चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ لِیُنْذِرَ یَوْمَ التَّلَاقِ ﴿۱۵﴾ یَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ

अपने बन्दों में से ताके मुलाक़ात के दिन से वो डराए। जिस दिन वो बाहर निकले हुए होंगे।

لَا یَخْفٰی عَلَی اللّٰهِ مِنْهُمْ شَیْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْیَوْمَ ؕ

अल्लाह पर उन की कोई चीज़ मखफी नहीं। (अल्लाह फरमाएंगे के) आज किस की सल्तनत है?

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلْیَوْمَ تُجْزٰی كُلُّ نَفْسٍ ۢ

(जवाब होगा) ग़ालिब यकता अल्लाह ही की है। उस दिन हर शख्स को बदला दिया जाएगा उन आमाल का जो

بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْیَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۷﴾

उस ने किए। आज किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَاَنْذِرْهُمْ یَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَی الْحَنَاجِرِ

और आप उन को क़यामत के दिन से डराइए जब दिल गले तक आ जाएंगे, ग़म से घुट

كٰظِمِیْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ حَمِیْمٍ وَّلَا شَفِیْعٍ

रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न सिफारिशी

یُّطَاعُ ﴿۱۸﴾ یَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْیُنِ وَمَا تُخْفِی الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾

जिस की बात मानी जाए। वो जानता है आँखों की खयानत को और उसे जो सीने छुपाते हैं।

وَاللّٰهُ یَقْضِیْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

और अल्लाह हक़ के साथ फैसला करेगा। और वो जिन को ये पुकारते हैं अल्लाह के अलावा

لَا یَقْضُوْنَ بِشَیْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۲۰﴾ ع ۲

वो किसी चीज़ का फैसला नहीं कर सकते। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

क्या वो ज़मीन में चले नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम

الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

कैसा हुवा जो उन से पेहले थे? जो उन से भी ज़्यादा क़ूव्वत वाले

وَّ اٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ

और ज़मीन में निशानात वाले थे, फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। और उन को

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۲۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ

अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं था। ये इस वजह से के उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِىٌّ

मोअजिज़ात ले कर आए थे, तो उन्हों ने कुफ़्र किया, फिर अल्लाह ने उन को पकड़ लिया। यक़ीनन वो क़ूव्वत वाला,

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۲﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا

सख्त सज़ा देने वाला है। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपने मोअजिज़ात

وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۳﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا

और रोशन दलील दे कर भेजा। फिरऔन और हामान और क़ारून की तरफ, तो उन्हों ने कहा के

سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿۲۴﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا

ये जादूगर है, झूठा है। फिर जब उन के पास वो हक़ ले कर आए हमारी तरफ से तो उन्हों ने कहा

اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ

के क़त्ल कर दो उन के बेटों को जो उन के साथ ईमान लाए हैं और उन की औरतों को ज़िन्दा रेहने दो।

وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿۲۵﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

और काफिरों का मक्र तो ज़लालत ही का था। और फिरऔन ने कहा के

ذَرُوْنِىْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ

तुम मुझे छोड़ दो के मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ, और उसे चाहिए के वो अपने रब को पुकारे। मैं डरता हूँ

اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِى الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿۲۶﴾

कहीं वो तुम्हारा मज़हब बदल दे या इस मुल्क में फसाद बरपा करे।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّىْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ने पनाह ली है अपने रब और तुम्हारे रब की हर तकब्बुर करने वाले से

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۴۱﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۳ ع ۸

जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। और एक मोमिन मर्द ने कहा

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا

आले फिरऔन में से जो अपना ईमान छुपा रहा था, क्या तुम क़त्ल करते हो एक शख़्स को इस बिना पर के

اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ

वो केहता है के मेरा रब अल्लाह है, हालांके वो तुम्हारे पास रोशन मोअजिज़ात तुम्हारे रब की तरफ से ले कर आया है?

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا

और अगर वो झूठा है तो उसी पर उस के झूठ का वबाल पड़ेगा। और अगर वो सच्चा है तो तुम्हें

يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ

उस अज़ाब का कुछ हिस्सा पहोंचेगा जिस से वो तुम्हें डरा रहा है। यक़ीनन अल्लाह उस को हिदायत नहीं देते जो

هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۸﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ

हद से बढ़ने वाला, झूठा है। ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारे लिए आज सल्तनत है,

ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ

तुम इस मुल्क में ग़ालिब हो। फिर कौन हमारी नुसरत करेगा अल्लाह के अज़ाब से

اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى

अगर हमारे पास अज़ाब आ जाए? फिरऔन ने कहा के मैं तुम्हें नहीं दिखाता मगर वही जो मैं देख रहा हूँ,

وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿۲۹﴾ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ

और मैं तुम्हारी रहनुमाई करता हूँ भलाई ही के रास्ते की तरफ। और उस शख़्स ने कहा जो ईमान लाया था के

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿۳۰﴾ مِثْلَ دَاْبِ

ऐ मेरी क़ौम! मुझे डर है के तुम पर वैसा ही दिन न आ जाए जैसा बहोत से गिरोहों पर आ चुका है। क़ौमे नूह और

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ

क़ौमे आद और क़ौमे समूद और उन के बाद वालों के जैसे हाल का।

وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿۳۱﴾ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म का इरादा भी नहीं करते। और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर एक दूसरे को पुकारने के दिन

يَوْمَ التَّنَادِ ﴿۳۲﴾ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

का खौफ करता हूँ। जिस दिन तुम पुश्त फेर कर भागोगे। तुम्हारे लिए अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं

مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

होगा। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ

और तहक़ीक़ के तुम्हारे पास यूसुफ (अलैहिस्सलाम) इस से पेहले रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर तुम बराबर शक में

فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

रहे उस से जो तुम्हारे पास वो ले कर आए। यहाँ तक के जब वो वफात पा गए, तो तुम ने कहा

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

अल्लाह इस के बाद किसी पैग़म्बर को हरगिज़ नहीं भेजेगा। इसी तरह अल्लाह गुमराह करता है

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿٣٤﴾ ۚ اِلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ

उस को जो हद से बढ़ने वाला, शक में पड़ा होता है। उन लोगों को जो झगड़ा करते हैं

فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात में किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास आई हो। ये झगड़ा अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक

وَ عِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ

बहोत ही ग़ुस्सा दिलाने वाली चीज़ है। इस तरह अल्लाह हर तकब्बुर करने वाले ज़ालिम के दिल पर मुहर

مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ

लगा देते हैं। और फिरऔन बोला के ऐ हामान! तू मेरे लिए एक ऊँची

صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ

इमारत तामीर कर ताके मैं उन रास्तों तक पहोंचूँ। आसमान के रास्तों तक,

فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ

फिर मैं मूसा के रब को झांक कर देखूँ, और यक़ीनन मैं उसे झूठा गुमान करता हूँ। और इसी तरह

زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ

फिरऔन के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई और उसे रास्ते से रोका गया।

وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ

और फिरऔन का मक्र नहीं था मगर तबाही का। और उस शख़्स ने कहा जो ईमान लाया था

يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ يٰقَوْمِ اِنَّمَا

ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरा इत्तिबा करो, मैं तुम्हें नेकी के रास्ते की रहनुमाई करूँगा। ऐ मेरी क़ौम! ये दुन्यवी

هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ

ज़िन्दगी तो सिर्फ थोड़ा सा नफा उठाना है। और यक़ीनन आखिरत वो हमेशा रेहने का

الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ

घर है। जो बुरे अमल करेगा तो उसे बदला नहीं दिया जाएगा मगर उसी के बक़दर।

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

और जो नेक अमल करे, मर्दों में से हो या औरतों में से बशर्तेके वो मोमिन हो,

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ

तो वो लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उन को उस में बेहिसाब रोज़ी दी

حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى

जाएगी। और ऐ मेरी क़ौम! मुझे क्या हुवा के मैं तुम्हें बुला रहा हूँ नजात

النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ

की तरफ और तुम मुझे बुला रहे हो आग की तरफ। तुम मुझे बुलाते हो ताके मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूँ

وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ

और मैं उस के साथ शरीक ठेहराऊँ ऐसी चीज़ जिस की मेरे पास कोई दलील नहीं। और मैं तुम्हें बुला रहा हूँ

اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ

ज़बर्दस्त, बहोत ज़्यादा बख्शने वाले अल्लाह की तरफ। यक़ीनी बात है के तुम मुझे जिस की तरफ बुलाते हो

لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ

उस की तरफ दावत नहीं दी जा सकती दुन्या में और न आखिरत में,

وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

और ये के हम सब को लौटना है अल्लाह की तरफ और ये के हद से आगे बढ़ने वाले ही दोज़खी हैं।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ

फिर अनक़रीब तुम याद करोगे उस को जो मैं तुम से केह रहा हूँ। और मैं अपना मुआमला अल्लाह के

اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ

सुपुर्द करता हूँ। यक़ीनन अल्लाह बन्दों को खूब देख रहे हैं। फिर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को बचा लिया

مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

उन की बुरी तदबीरों से और आले फिरऔन को बुरे अज़ाब ने घेर लिया।

اَلنَّارُ يُعۡرَضُوۡنَ عَلَيۡهَا غُدُوًّا وَّ عَشِيًّا ۚ وَيَوۡمَ تَقُوۡمُ
आग पर उन्हें पेश किया जाता है सुबह व शाम। और जिस दिन क़यामत

السَّاعَةُ ۟ اَدۡخِلُوۡۤا اٰلَ فِرۡعَوۡنَ اَشَدَّ الۡعَذَابِ ﴿٤٦﴾
क़ाइम होगी, (कहा जाएगा) आले फिरऔन को सख्ततरीन अज़ाब में दाखिल कर दो।

وَاِذۡ يَتَحَآجُّوۡنَ فِى النَّارِ فَيَقُوۡلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيۡنَ
और जब वो आग में झगड़ रहे होंगे, फिर कमज़ोर लोग कहेंगे बड़े बन कर

اسۡتَكۡبَرُوۡۤا اِنَّا كُنَّا لَـكُمۡ تَبَعًا فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّغۡنُوۡنَ
रेहने वालों से के यक़ीनन हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम इस

عَنَّا نَصِيۡبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡۤا اِنَّا
आग का कुछ हिस्सा हम से हटा दोगे? तो कहेंगे जो बड़े बन कर रहे के हम

كُلٌّ فِيۡهَاۤ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدۡ حَكَمَ بَيۡنَ الۡعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ
सब उसी आग में हैं। यक़ीनन अल्लाह ने बन्दों के दरमियान फैसला कर दिया है। और वो

الَّذِيۡنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادۡعُوۡا رَبَّكُمۡ يُخَفِّفۡ
लोग जो दोज़ख में होंगे जहन्नम के फरिशतों से कहेंगे के तुम अपने रब से मांगो के एक दिन तो

عَنَّا يَوۡمًا مِّنَ الۡعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوۡۤا اَوَلَمۡ تَكُ تَاۡتِيۡكُمۡ
अज़ाब हम से कुछ हल्का कर दे। वो कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर रोशन

رُسُلُكُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوۡا بَلٰى ؕ قَالُوۡا فَادۡعُوۡا ۚ
मोअजिज़ात ले कर नहीं आए थे? वो कहेंगे क्यूं नहीं। वो फरिशते कहेंगे फिर तुम पुकारते रहो।

وَمَا دُعٰٓؤُا الۡكٰفِرِيۡنَ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ اِنَّا لَنَنۡصُرُ رُسُلَنَا ع ٥ ١٣ ١٠
और काफिरों की दुआ महज़ बेअसर है। हम मदद करते हैं अपने पैग़म्बरों की

وَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَيَوۡمَ يَقُوۡمُ الۡاَشۡهَادُ ﴿٥١﴾
और उन की जो ईमान लाए, दुन्यवी ज़िन्दगी में भी और उस दिन भी जिस दिन गवाह खड़े होंगे।

يَوۡمَ لَا يَنۡفَعُ الظّٰلِمِيۡنَ مَعۡذِرَتُهُمۡ وَلَهُمُ اللَّعۡنَةُ
जिस दिन ज़ालिमों को उन की माज़िरत नफा नहीं देगी और उन के लिए लानत है

وَلَهُمۡ سُوۡٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡهُدٰى
और उन के लिए बुरा घर है। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हिदायत दी

وَ اَوْرَثْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ ﴿۵۳﴾ هُدًى

और बनी इस्राईल को किताब दी। जो हिदायत है

وَّ ذِكْرٰى لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۵۴﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

और नसीहत है अक़्ल वालों के लिए। इस लिए आप सब्र कीजिए, यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है

وَّ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِیِّ

और अपने गुनाहों के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहिए और अपने रब की हम्द के साथ सुबह व शाम

وَ الْاِبْكَارِ ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیْرِ

तस्बीह कीजिए। जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ा करते हैं किसी दलील

سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ

के बग़ैर जो उन के पास आई हो, उन के सीनों में सिवाए तकब्बुर के कुछ भी नहीं है, जिस को वो पहोंचने

بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۵۶﴾

वाले नहीं। इस लिए आप अल्लाह की पनाह तलब कीजिए। यक़ीनन वो सुनने वाला, देखने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ

अलबत्ता आसमानों और ज़मीन का पैदा करना ये ज़्यादा बड़ा है इन्सानों के पैदा करने से,

وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ مَا یَسْتَوِی الْاَعْمٰى

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और अन्धा और देखने वाला बराबर नहीं

وَ الْبَصِیْرُ ۙ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ لَا الْمُسِیْٓءُ ؕ

हो सकते। और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वो और बदकार बराबर नहीं हो सकते।

قَلِیْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِیَةٌ

बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। क़यामत ज़रूर आने वाली ही है

لَّا رَیْبَ فِیْهَا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۹﴾

जिस में कोई शक नहीं, लेकिन लोगों में से अक्सर ईमान नहीं लाते।

وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ

और तेरे रब ने कहा के तुम मुझ से मांगो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा। जो

یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ﴿۶۰﴾ ع ۶

मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं, अनक़रीब वो जहन्नम में ज़लील हो कर दाख़िल होंगे।

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَالنَّهَارَ

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताके तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन

مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

रोशन बनाया। यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर फ़ज़्ल वाला है, लेकिन अक्सर

النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۶۱﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ

लोग शुक्र अदा नहीं करते। वही अल्लाह तुम्हारा रब है, जो हर चीज़ का पैदा करने

شَیْءٍ ۫ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۶۲﴾ كَذٰلِكَ وقف لازم

वाला है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहाँ लौटाए जा रहे हो? इसी तरह

یُؤْفَكُ الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اَللّٰهُ

लौटाया गया उन लोगों को भी जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे। अल्लाह

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً

ही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठेहेरने की जगह और आसमान को छत बनाया

وَّ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ

और तुम्हारी सूरतें बनाईं, फिर तुम्हारी सूरतें बहोत अच्छी बनाईं और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ۬ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۴﴾ هُوَ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। फिर अल्लाह बाबरकत है जो तमाम जहानों का रब है। वही

الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ

ज़िन्दा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम उसी को पुकारो उसी के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۵﴾ قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ

तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। आप फरमा दीजिए के मुझे इस से मना किया गया है के मैं इबादत करूं

الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَیِّنٰتُ

उन की जिन को तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब के मेरे पास रोशन आयतें पहोंचीं मेरे रब की तरफ से।

مِنْ رَّبِّیْ ۪ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ

और मुझे हुक्म है के मैं रब्बुल आलमीन का फरमांबरदार रहूँ। वही

الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ

अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ

से, फिर तुम्हें वो बच्चा बना कर निकालता है, फिर (तुम को ज़िन्दा रखता है) ताके तुम अपनी जवानी को पहोंचो,

ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ

फिर (तुम को और ज़िन्दा रखता है) ताके तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से बाज़ों को वफात दी जाती है उस से पेहले

وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ

और ताके तुम मुक़र्रर की हुई आखिरी मुद्दत को पहोंचो, और ताके तुम अक़्ल से काम लो। वही

الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

अल्लाह है जो ज़िन्दा रखता है और मौत देता है। फिर जब वो किसी मुआमले का फैसला करता है, तो सिर्फ उस से केहता है

ع ٧ ١٢

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ

के हो जा, तो वो हो जाता है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जो अल्लाह की

معانقة ١٣ عند المتأخرين ١٢

فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

आयात में झगड़ा करते हैं? वो कहाँ फिरे जा रहे हैं? जिन्हों ने किताब को

بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۟ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

और उस को भी झुठलाया जिस को दे कर हम ने अपने पैग़म्बरों को भेजा। फिर अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

जब के तौक़ और ज़न्जीरें उन की गर्दनों में होंगी। उन को गर्म पानी

فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ

में घसीटा जाएगा। फिर आग में झौंक दिए जाएंगे। फिर उन से पूछा

لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا

जाएगा के कहाँ हैं वो जिन को अल्लाह के सिवा तुम शरीक ठेहराते थे? वो बोलेंगे के

ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۭ

वो हम से खो गए, बल्के उस से पेहले किसी चीज़ को हम पुकारते नहीं थे।

كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

इसी तरह अल्लाह काफिरों को गुमराह करेंगे। ये सज़ा इस वजह से है के

تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

ज़मीन में नाहक़ तुम इतराते थे, और इस लिए के तुम

تَمْرَحُوْنَ ۚ﴿٧٥﴾ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

अकड़ते थे। जहन्नम के दरवाज़ों में तुम दाखिल हो जाओ, उस में हमेशा

فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ

रेहने के लिए। ये तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। इस लिए आप सब्र कीजिए,

اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ

यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर अगर आप को हम दिखा दें उस अज़ाब का कुछ हिस्सा जिस से हम उन्हें

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَلَقَدْ

डरा रहे हैं या हम आप को वफात दे दें, तब भी वो हमारी तरफ लौटाए जाएंगे। और

اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا

हम ने आप से पेहले भी पैग़म्बर भेजे, उन में से बाज़ के क़िस्से हम ने आप के सामने बयान

عَلَيْكَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ

किए हैं और उन में से बाज़ वो हैं जिन के क़िस्से हम ने आप के सामने बयान नहीं किए। और किसी

لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ

पैग़म्बर की ये ताक़त नहीं थी के वो कोई मोअजिज़ा ले आए मगर अल्लाह की इजाज़त से। फिर जब अल्लाह

اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ ع ١٣

का हुक्म आया तो हक़ के साथ फैसला कर दिया गया और वहाँ पर एहले बातिल खसारे में रहे।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताके तुम उन में से बाज़ पर सवारी करो

وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا

और उन में से बाज़ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उन में और भी मनाफेअ हैं और ताके

عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَ عَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ

उन पर सवार हो कर तुम अपने दिलों की हाजत तक पहोंच जाओ और उन चौपाओं पर और कशतियों पर तुम्हें सवार

تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ

कराया जाता है। और अल्लाह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। फिर अल्लाह की निशानियों में से किस

تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

किस निशानी का तुम इन्कार करोगे? क्या वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ

के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से पेहले थे? जो तादाद में उन से ज़्यादा थे

مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى

और क़ूव्वत में उन से मज़बूत थे और उन्हों ने ज़मीन में निशानात भी सब से ज़्यादा (छोड़े), फिर

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ

भी उन के कुछ काम नहीं आई उन की कमाई। फिर जब उन के पास उन के

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए तो वो इतराने लगे उस इल्म पर जो उन के पास था,

وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا

और उन को घेर लिया उस अज़ाब ने जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब

بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ

देखा तो बोल उठे के हम यकता अल्लाह पर ईमान ले आए, और हम ने कुफ़्र किया उस के साथ जिस को हम शरीक

مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا

ठेहराते थे। तो उन को उन का ईमान लाना नाफेअ नहीं हुवा जब उन्हों ने हमारा

بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِىْ قَدْ خَلَتْ فِىْ عِبَادِهٖ ۚ

अज़ाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत है जो उस के बन्दों में पेहले रही है।

ع ٩ ١٤ وَ خَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

और उस जगह काफिर खसारे में रहे।

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (٦١) (٤١)

اٰيَاتُهَا ٥٤ رُكُوْعَاتُهَا ٦

और ६ रूकूअ हैं सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई उस में ५४ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ

हॉ मीम। इस का उतारा जाना बड़े महरबान, निहायत रहम वाले अल्लाह की तरफ से है। ये किताब है

فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

जिस की आयतें तफसील से बयान की गई हैं जो अरबी ज़बान वाला कुरआन है ऐसी क़ौम के लिए जो इल्म रखती है।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٤

बशारत सुनाने वाली और डराने वाली है। फिर उन में से अक्सर ने ऐराज़ किया, फिर वो नहीं सुनते।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

और केहते हैं के हमारे दिल पर्दे में हैं उस से जिस की तरफ तुम हमें बुलाते हो,

وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ

और हमारे कानों में डाट है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान हिजाब है,

فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝٥ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

तो तुम अपना काम करो, हम अपना काम करेंगे। आप फरमा दीजिए के मैं भी बशर हूँ जैसे तुम, الثلثة

يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا

मेरी तरफ वही की जाती है के तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, तो उसी की तरफ

اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝٦

मुतवज्जेह रहो और उसी से मग़फिरत मांगो। और मुशरिकीन के लिए हलाकत है।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

जो ज़कात नहीं देते और आखिरत के भी

كٰفِرُوْنَ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

मुन्किर हैं। यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٨ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ ع ٥

उन के लिए सवाब है जो कभी खत्म न होगा। आप फरमा दीजिए क्या तुम कुफ्र करते हो

بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ

उस अल्लाह के साथ जिस ने ज़मीन पैदा की दो दिन में और उस के लिए

لَهٗٓ اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩ وَجَعَلَ فِيْهَا

तुम शरीक बनाते हो। वो तमाम जहानों का रब है। और उसी ने ज़मीन में

رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ

उस के ऊपर से पहाड़ रख दिए और उस के अन्दर बरकतें रखी हैं और ज़मीन में ज़मीन वालों

اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝١٠

की खाने की चीज़ें मिक़्दारे मुअय्यन के साथ रख दीं चार दिन में। पूछने वालों का (जवाब) पूरा हुवा।

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِىَ دُخَانٌ فَقَالَ

फिर वो आसमान की तरफ मुतवज्जेह हुवा इस हाल में के वो धुवां था, तो उस ने

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ

आसमान से और ज़मीन से कहा के तुम दोनों आओ खुशी से या मजबूरी से। दोनों ने कहा के

اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿۱۱﴾ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ

हम खुशी से आते हैं। फिर अल्लाह ने उन को सात आसमान बनाने का फैसला किया

فِىْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِىْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ

दो दिन में, और हर आसमान में उस का हुक्म दे दिया।

وَ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ

और हम ने आसमाने दुन्या को मुज़य्यन किया चिराग़ों से और हिफाज़त के खातिर।

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۱۲﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا

ये ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुतअय्यन की हुई मिक़दार है। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ

तो आप फरमा दीजिए के मैं तुम्हें डराता हूँ ऐसे अज़ाब से जो क़ौमे आद व क़ौमे समूद के अज़ाब

وَّثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

जैसा होगा। जब उन के पास पैग़म्बर आए उन के सामने से

وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ

और उन के पीछे से के तुम इबादत मत करो मगर अल्लाह ही की। तो बोले के अगर हमारा

رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

रब चाहता तो वो फरिशतों को उतारता। यक़ीनन हम उस दीन के साथ भी कुफ्र करते हैं जिसे दे कर तुम

كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ

भेजे गए हो। अलबत्ता क़ौमे आद तो उस ने ज़मीन में नाहक़

الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا

तकब्बुर किया, और उन्हों ने कहा के हम से कौन ज़्यादा कूव्वत वाला है? क्या उन्हों ने देखा नहीं

اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ كَانُوْا

के जिस अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है, वो उन से भी ज़्यादा कूव्वत वाला है। और वो

بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
हमारी आयतों का इन्कार करते थे। फिर हम ने उन पर सर्द तूफानी हवा

فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ
मन्हूस दिनों में भेजी ताके उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी में

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
ज़िल्लत का अज़ाब हम चखाएं। और आखिरत का अज़ाब तो और ज़्यादा रुस्वाई वाला है

وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
और उन की नुसरत भी नहीं की जाएगी। और जो क़ौमे समूद थी, तो हम ने उन को रास्ता बतलाया, फिर उन्हों ने

الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ
अन्धा रेहने को हिदायत के मुक़ाबले में पसन्द किया, फिर उन्हें उन के करतूत की वजह से

الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ
ज़िल्लत वाले अज़ाब की कड़क ने पकड़ लिया। और हम ने बचा लिया उन को जो

اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ
ईमान लाए थे और मुत्तकी थे। और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन दोज़ख की तरफ इकट्ठे किए जाएंगे

اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا
फिर उन्हें (जमाअतों में) तक़सीम किया जाएगा। यहाँ तक के जब वो दोज़ख के पास पहोंचेंगे

شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَ اَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ
तो उन के खिलाफ गवाही देंगे उन के कान और उन की आँखें और उन की खालें

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
उन आमाल की जो वो करते थे। और वो अपनी खालों से कहेंगे के तुम ने हमारे खिलाफ गवाही

عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
क्यूं दी? वो कहेंगी के हम से बुलवाया उस अल्लाह ने जिस ने हर चीज़ को गोयाई दी है

وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾
और उसी ने तुम्हें पेहली मरतबा पैदा किया और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ لَآ
और तुम छुपा नहीं सकते थे के तुम्हारे खिलाफ गवाही दें तुम्हारे कान और

اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ

तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें, लेकिन तुम ने गुमान किया था के अल्लाह

لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ

नहीं जानता बहोत से आमाल जो तुम करते हो। और यही तुम्हारा गुमान था जो

ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

तुम ने अपने रब के साथ रखा जिस ने तुम्हें हलाक कर दिया, फिर तुम खसारा उठाने वालों में से बन गए।

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا

फिर अगर वो सब्र करें तो दोज़ख उन का ठिकाना है। और अगर वो मुआफी मांगना चाहें

فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ

तो उन से मुआफी क़बूल नहीं की जाएगी। और हम ने उन के लिए क़रीन मुतअय्यन किए हैं,

فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

फिर उन्हों ने उन के लिए मुज़य्यन किया है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है,

وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

और क़ौल साबित हो गया उन पर मअ उन उम्मतों के जो उन से पेहले गुज़र चुकी हैं

ع ٣ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

जिन्नात और इन्सानों की। यक़ीनन वो खसारे वाले हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ

और काफिरों ने कहा के तुम इस कुरआन की तरफ कान मत लगाओ

وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ

और उस के बीच में शोर करो, शायद तुम ग़ालिब रहो। फिर उन काफिरों को हम

كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ

ज़रूर सख्त अज़ाब चखाएंगे। और हम उन्हें ज़रूर सज़ा देंगे

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ

उन के बुरे आमाल की। ये दोज़ख अल्लाह के दुशमनों की सज़ा है।

لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

उन का उसी में हमेशा का घर है। उस की सज़ा में के वो हमारी आयतों का इन्कार

يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا

करते थे। और काफिर कहेंगे ऐ हमारे रब! तू हमें दिखा

الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ

वो जिन्नात और इन्सान जिन्हों ने हमें गुमराह किया के हम उन्हें हमारे पैरों के

اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

नीचे डाल दें ताके वो सब से ज़्यादा नीचे वालों में से हो जाएं। तहक़ीक़ के जिन्हों ने

قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर उसी पर क़ाइम रहे उन पर फरिशते उतरते हैं (केहते हुए के)

اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ

तुम खौफ न करो और ग़म न करो और बशारत सुन लो उस जन्नत की जिस का

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ

तुम से वादा किया जाता था। हम तुम्हारे साथी हैं दुन्या

الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ

और आखिरत में। और तुम्हारे लिए आखिरत में वो नेअमतें होंगी जो तुम्हारे जी चाहेंगे

اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ

और तुम्हारे लिए उस में वो नेअमतें होंगी जो तुम मांगोगे। बहोत ज़्यादा मग़फिरत करने वाले, निहायत

رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ ع ١٨

रहम वाले अल्लाह की तरफ से मेहमानी है। और उस से ज़्यादा अच्छी बात वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ

وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي

बुलाए और नेक अमल करे और कहे के मैं मुसलमानों में से हूँ। और भलाई

الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۭ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

और बुराई बराबर नहीं हो सकती। दफा कीजिए उस के ज़रिए जो बेहतर हो,

فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ

तो फौरन वो शख्स के आप के और उस के दरमियान अदावत थी, वो ऐसा हो जाएगा गोया के वो पक्का

حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا

दोस्त है। और ये मरतबा सिर्फ सब्र करने वालों ही को दिया जाता है। और

يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿۳۵﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ

वही उस को पाते हैं जो बड़े नसीब वाले हैं। और अगर आप को शैतान की तरफ

مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

से कोई वसवसा आए तो अल्लाह की पनाह मांगिए। यक़ीनन वो सुनने वाला,

الْعَلِيْمُ ﴿۳۶﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ

इल्म वाला है। और अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन हैं और सूरज

وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا

और चाँद हैं। सूरज और चाँद को सज्दा मत करो, और सज्दा करो

لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۳۷﴾

उस अल्लाह को जिस ने उन्हें पैदा किया अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ

फिर अगर वो तकब्बुर करें, तो यक़ीनन वो फरिशते जो तेरे रब के पास हैं वो उस की तस्बीह करते

لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿۳۸﴾ السجدة وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

रेहते हैं रात और दिन में और वो उकताते नहीं। और अल्लाह की निशानियों में से

السجدة ۱۱

اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

ये है के तू ज़मीन को ख़ुश्क देखेगा, फिर जब हम उस के ऊपर पानी बरसाते हैं

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِىْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْىِ

तो वो हिलने लगती है और उभर आती है। यक़ीनन वो अल्लाह जिस ने ज़मीन को ज़िन्दा किया वो जरूर मुर्दों को ज़िन्दा

الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

करने वाला है। यक़ीनन वो हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। जो

يُلْحِدُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ

हमारी आयतों में इल्हाद करते है वो हम पर मख्फी नहीं हैं। क्या फिर वो

يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِىْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

जो आग में डाला जाएगा वो बेहतर है या वो जो बेखौफ हो कर क़यामत के दिन आएगा?

اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّ

जो चाहो कर लो, बेशक वो तुम्हारे आमाल को खूब देख रहा है। जिन

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ
लोगों ने इस कुरआन के साथ कुफ़्र किया जब के वो उन के पास आया। और ये तो मुअज्ज़ज़

عَزِيْزٌ ﴿۴۱﴾ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
किताब है। उस में न उस के आगे से बातिल आ सकता है और न उस के

وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ۭ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿۴۲﴾ مَا يُقَالُ
पीछे से। हिक्मत वाले क़ाबिले तारीफ अल्लाह की तरफ से उतारी गई है। आप से वही

لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ
कहा जाता है जो आप से पेहले पैग़म्बरों से कहा गया। बेशक आप का रब

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۴۳﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا
मुआफ करने वाला भी है और अलमनाक सज़ा देने वाला भी है। और अगर हम उस को अजमी कुरआन

اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ۭ ءَاَعْجَمِيٌّ
बनाते तो ज़रूर ये केहते के उस की आयतें तफ़सील से बयान क्यूं नहीं की गईं? क्या ये (कुरआन) तो अजमी

وَّعَرَبِيٌّ ۭ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ۭ
और (नबी) अरबी? आप फरमा दीजिए के ये कुरआन ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है।

قرأ حفص بتسهيل الهمزة الثانية ۱۲

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ
और जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में डाट है, और ये कुरआन उन पर

عَمًى ۭ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۴۴﴾
अन्धापा है। उन को पुकारा जाता है दूर जगह से। ع ۵ ۲۱ ۱۶

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ
हम ने ही मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी थी, फिर उस में इखतिलाफ किया गया।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ
और अगर एक कलिमा तेरे रब की तरफ़ से पेहले से न होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता। और ये लोग

لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۴۵﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ
उस की तरफ़ से बहोत बड़े शक में हैं। जिस ने भला काम किया तो अपनी ही ज़ात के लिए।

وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۴۶﴾
और जिस ने बुरा काम किया तो वबाल उसी पर है। और तेरा रब बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं।